ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)83
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. श्रीकान्त लक्ष्मणराव आरले
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
विभाग, ओड़िशा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, कोरापुट,
ओड़िशा, भारत।

Corresponding Author :
डॉ. श्रीकान्त लक्ष्मणराव आरले
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
विभाग, ओड़िशा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, कोरापुट,
ओड़िशा, भारत।

कविता –

मैं अकेला

यात्रा में लोग खुश हैं
बातचीत करते
हंसते जा रहे हैं
मैं अकेला
खोया खोया
उनमें तुझे ढूंढता
जा रहा हूँ...

कविता –

जीवन का भविष्य

जिंदगी दिनों से नहीं
दिलों से बनती है
दो दिलों के मिलने से
एक जान बनती है
दो दिल
एक जान
खूब सारा प्यार
सुकून भरे दिन
सुखद अनुभूति
और उसका परिणाम
एक नन्ही सी, प्यारी सी परी
जिसमें छिपा सारा भविष्य...

• • •